माटी से बनी मेरी काया

समर्थ नारी गौरव

संगीता देवांगन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

माटी से बनी मेरी काया

संगीता देवांगन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-81- 951277-0-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail-com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - मीनाक्षी सुकुमारन 2021

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SANGEETA DEVANGAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

"माटी से बनी मेरी काया"

"ब्रम्ह कण से रचित मैं,
हर रूप में विशेष्य हूं मैं,
सृष्टि भी नतमस्तक हो मुझमें,
मैं जननी, मर्यादा मैं।"

हम नारियों की सशक्तता

यह सत्य है की प्राचीन समय से ही हमारी धरा पर नारी का विशेष स्थान रहा है। नारी को ही पौराणिक ग्रंथों में भी पूज्यनीय और देवी तुल्य मानकर उपासना की गई है। प्राचीन युग से ही भारतीय नारी ने अपने समर्पण और त्याग के द्वारा स्वयं को एक मिसाल की तरह सिद्ध कर एक विशेष स्थान प्राप्त किया है।

जबकि हम सभी यह जानते हैं की प्राचीन समय में नारियों ने बिना किसी सामाजिक सहयोग की भी एवं अनेक विरोधों को सहने के साथ ही स्वयं को सशक्त सिद्ध किया है। यह मिसाल की मशाल आज भी हम नारियों के मन में जल रही है और यह प्रेरणा भी दे रही है की हम आज भी पहले की नारियों के समान, बल्कि कहीं ज्यादा ही काबिल और कामयाब होते जा रहे हैं। आज भी बहुत सारे सामाजिक एवं पारिवारिक बंधन हमें रीति-रिवाजों की जंजीरों में जकड़े

हुए हैं, फिर भी हम सभी पक्षों में अपनी बुद्धि व सामर्थ्य के अनुसार उनमें सामंजस्य बनाए हुए हैं।

"मैं हूं सहनशील सीता जैसी,
सावित्री जैसे अडिग प्रण,
मैं 'कौशल्या' ममता से भरी,
लक्ष्मी-रजिया जैसे मेरे बल प्रचंड।"

आज भी देखा जाए तो परिवार समाज या राष्ट्र तब तक प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता, जब तक कि वह महिलाओं के प्रति भेदभाव या तिरस्कार को महत्व देगा। परंतु हमें यह बात भी नहीं भूलना है की जहां हमारे समाज में कुछ लोग बाधक हैं, तो वही बहुत से सहयोगी भी आज भी हैं जो हमें प्रेरित भी करते रहे हैं आगे बढ़ने के लिए। केवल हमें स्वयं को पहचानना है कि हम किस कार्य के लिए एवं कितने सक्षम हैं। इस क्षमता को पहचानने के लिए हमें अपनी बुद्धि, बल एवं परिवार का मान रखते हुए संपूर्ण जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए आगे बढ़ना है, क्योंकि यह बहुकार्यण की क्षमता ईश्वर ने केवल हम नारियों को ही दिए हैं और इसीलिए यह हमारा कर्तव्य भी बनता है।

जब हम अपने व्यक्तिगत लाभ के साथ ही समाज के कार्य में भी निर्णय लेने में पूर्णतया सक्षम हों, तभी हम सशक्त कहलाएंगे। अब महिलाओं की क्षमता और उनके योगदान को देखकर सरकार भी भारत में हमें राष्ट्र प्रगति के लिए अग्रसर

कर रही हैं। जिसके साथ ही महिला सशक्तिकरण मूल सिद्धांत भी बनाएं जा रहे हैं, जिसमें महिलाओं को अनेक अधिकार, जैसे- सामाजिक, राजनीतिक, वित्तीय सुरक्षा एवं न्यायिक शक्ति देने हेतु निरंतर प्रयासरत है। आज भी हमारे राज्य छत्तीसगढ़ में आदिवासी नारियों ने जिस संस्कृति व लोक कलाओं को प्रारंभ से ही संचित कर रखा था, वे आज संपूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त कर रही हैं। यह सभी चीजें औषधीय रूप में, कला के रूप में एवं वन्य जीवन को संरक्षित करने के रूप में निखर कर सामने आ रही हैं। इन परिस्थितियों में भी यह नारियां अपने आप को बहुत अधिक सिद्ध कर रही हैं, केवल अपने ही दम पर।

महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण (सोच)-

महिला दिवस में हम महिलाओं का सम्मान इसी आधार पर करते हैं की लोगों का हमारे प्रति क्या सोच है। महिलाओं के प्रति सही दृष्टिकोण को विकसित करने हेतु उन्हें अलग-अलग विभाग में विभिन्न पदों पर नियुक्त किया गया है। जिससे संबंधित कार्यों में किसी भी नारी को अपनी बात रखने में किसी प्रकार की हिचक या अड़चन ना आए। अतः किसी भी नारी का सम्मान किसी पुरस्कार से नहीं, अपितु संस्कार से ही किया जा सकता है। उनका सम्मान कर और उनकी गरिमा को बनाए रखकर उनके प्रति दृष्टिकोण को बदला जा

सकता है। इसमें किसी पुरुष से तुलना कर हम उनकी महत्ता को आंक नहीं सकते।

समस्याएं:-

आज के युग में अधिकतर यह चर्चा होती है कि हर नारी पुरुषों के समान बनना चाह रही है, जिससे वे उनकी तरह सफल और हर क्षेत्र में कामयाब हो सकें। इसी कारणवश कभी-कभी हम भूल जाते हैं कि हमारा अस्तित्व क्या है। हम अपने सुलभता और कोमलता के गुणों को मन में घर नहीं करने देते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं की, हमारे समाज में प्राचीन समय में बहुत सारी कुरीतियां भी थी और कुछ बाहरी हमलों की वजह से बेटियों और पत्नियों की इज्जत खतरे में रही थी, जिस कारण उन्हें बाह्य वातावरण से दूरी रखा जाता था या तो उन्हें बचाने या अपने पुरुषत्व का बोध कराने। यह सोच जो उस समय से विकसित हुई थी, आज भी कुछ हद तक समाज में होने की वजह से महिलाएं कुंठित रहती हैं। जिस कारण समाज में असामाजिक तत्वों ने अपनी जगह बना कर बैठे हुए हैं। हर क्षेत्र से संबंधित महिलाएं चाहे वह शहरी गृहणी हों या ग्रामीण क्षेत्र की, अपने गुणों को पूर्णतया परख नहीं पा रही हैं। साक्षरता में भी खबरों के अनुसार महिलाएं आगे जरूर हैं परंतु अपने समाज के नीतियों और स्वयं के आत्मसम्मान के आगे वे अभी भी पूर्णतया साक्षर नहीं हैं। वे किसी ना किसी

रूप में शोषित हो ही रही हैं। उन्हें केवल वंश चलाने के लिए ही स्वयं से जोड़ना भी एक प्रकार का शोषण ही है।

समाधान:-

अब कुछ वर्षों से ऐसा समय आ गया है, जिसमें हमें ऐसे समाज का निर्माण करना है, जहां हमें बिना किसी लिंग भेद के अपनी श्रेष्ठता को पहचान कर अपने कार्य को एक नया आयाम देना है। इसमें हम किसी को भी अपने से श्रेष्ठतर या कमतर आंकने की जरूरत नहीं। हमें समाज के अतिरिक्त, परिवार में भी महिलाओं और पुरुषों के बीच भेदभाव को रोकना पड़ेगा। अतः हम नारियों को आर्थिक स्वतंत्रता के साथ ही स्वयं से जुड़े फैसले लेने की स्वतंत्रता भी होनी चाहिए, क्योंकि नारी किसी भी समाज का स्तंभ है। अतः समाज को नारियों की भूमिकाओं को नजरअंदाज नहीं करना है। इस तरह हम सही मायने में नारी सशक्तिकरण को सार्थक कर सकते हैं। अब यह हमारे लिए गर्व की बात भी है की राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति का भी गठन किया गया है।

भगवान शिव के अर्धनारीश्वर बनने की कथा यह सिद्ध करती है की हमें स्वयं के भीतर स्त्रीत्व की सुलभता को जीवंत रखना है और पुरुषत्व को अपने बौद्धिक वह अनुभव के स्तर पर एक तत्व के रूप में रखकर संतुलन बनाए रखना है।

विशेष:-

1. महिला दिवस की नीव क्लारा जेटकिंन ने वर्ष १९१० में रखी।
2. औपचारिक रूप से मान्यता १९७५ में मिली।
3. यह हर वर्ष ८ मार्च को पूरे विश्व में मनाया जाता है।
4. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक ऐसा दिन है, जिसमें हर समाज में, राजनीति में और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महिलाओं की तरक्की का जश्न मनाया जाता है।

"चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों, परंतु हर बार औरतों को ही अपनी काबिलियत सिद्ध करनी पढ़ती है। अग्नि परीक्षा देनी ही पड़ती है और इतनी हिम्मत किसी और में नारी के अलावा होती ही नहीं है। इसीलिए हम आज जो सशक्त हैं, तो इसके जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं।"

"बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी"

आज वर्तमान में यह बहुत ही अच्छा परिवर्तन आया है, कि अब नारियां मुखर हैं। जितनी भी बदलाव अब दिखाई दे रही है, वे हमारी आशाओं को आधार बना रही हैं। हमें आगे बढ़ने के लिए, हमारी गहरी उम्मीदें, हौसलों को नयी उड़ान दे रही हैं। हर क्षेत्र में हमारे जज्बे एक नवीन जहां का निर्माण कर रही है।

कोविड-19 महामारी के चलते, बीते एक साल से सारी परेशानियों और आपदाओं से जूझने के बावजूद भी सभी नारियां

हर क्षेत्र में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपनी काबिलियत को नए नए रूप में सिद्ध किए हैं। परिवार सम्हालने के साथ ही, घर से ऑफिस के काम कर, पुलिस रूप में सेवा कर, सफाई कर्मी, चिकित्सा, स्वास्थ्य कर्मचारी, शिक्षिका और अब वक्सिनेशन के सर्वे में भी पूर्णतया भागीदार बन गई हैं। इसके अलावा विभिन्न सरकारी या गैर सरकारी संस्थाओं के रूप में जरूरतमंद लोगो को निस्वार्थ सहायता भी दे रहीं हैं।

इन सभी कार्य में महिलाओं का आत्मबल दिखाई दे रहा है, परंतु कहीं कहीं यह कहना ग़लत नहीं होगा कि कुछ शारीरिक रूप से असक्त बच्चियों, लड़कियों या महिलाओं को उनके ही सहपाठी या परिचित द्वारा बुलिंग का शिकार होना पड़ता है। जिससे वे पूर्ण रूप से बिखर जाती हैं। कई बार तो सरल मन वाले भी दूसरों पर आए क्रोध को मन में हावी कर कमज़ोर पर ही अपनी भड़ास निकाल देते हैं। ऐसे में सामने वाले के प्रति सम्मान की उम्मीद भी छूट जाती है।

परिणाम स्वरूप ऐसे असक्त लोगों के साथ कई बार बहुत ही संगीन कृत्य भी हो जाते है। तात्पर्य यह है कि, हमें एक ऐसा माध्यम तैयार करना चाहिए, की जिस तरह सामान्य लोगों के मनोबल को हम सरलता से बढ़ा सकते हैं, उसी प्रकार असक्त नारियों के सम्मान और जीवनरक्षा के लिए आज भी बहुत से प्रयत्न करने होंगे और ये ज़्यादा मुश्किल भी नहीं है। जिससे हम कह सकें दुनियां को, की काले बादलों के कणों के

मध्य से भी रौशनी गुजरती है और जीवन को इन्द्रधनुष के रंगों से भर्ती है।

"जय भारत माता
जय भारत की नारियां"

धन्यवाद,

संगीता देवांगन,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

मैं

मैं ही मेनका
मैं ही रंभा
मैं ही उर्वशी
हूं श्वेत पुष्प से सुसज्जित
मैं ही मोहिनी-गजगामिनी

वर्षा बूंद की तान पर छनकती
मैं ही वीणा
संगीत बयार में बहती
मैं ही स्वरा

श्वेत पत्र पर कजरारे आखर
मैं ही शारदा
हूं सर्व शक्तियों से परिपूर्ण
मैं ही दुर्गा

करती पापियों का संहार
मैं ही काली
कठोर पाषाण को चीर कर निकलती
मैं ही गंगा

सर्वदा वैभव दायित्री
मैं ही लक्ष्मी
तप-ध्यान से सदा प्रेम बरसाती
मैं ही पार्वती

हूं त्याग की मूरत और साहसी
मैं ही जानकी
सरल, सुकोमल और नवजीवन दायिनी
मैं ही हर रूप में केवल एक .....

"मां"

अस्तित्व

"गिरा दोगे पंख गर मेरे
फिर भी भरूंगी उड़ान
इस धरा पर भी परचम फहराऊं
और छू लूंगी आसमान"

"चंद दैत्यों के ज़हरीले नाखून
छीन रहे हैं आबरू का सुकून
न होने दूंगी अब मैला धरा को इनसे
धरूंगी शक्तिपात्र मैं, न टपकने दूंगी विषैला खून"

"अब न बिकूंगी चौराहों पर
अब न बहूंगी आंसुओं के सैलाब पर
न बैठूंगी हाथ बांधकर
न छिपाऊंगी चेहरा घुटनों पर
न सोऊंगी दहेज की चिता पर
करलो पथरीले हर जगह को
पर चलूंगी सभी राह पर"

"हूं गुलाब और घिरूंगी कांटों से
रहूंगी घुंघट में और देखूंगी चौकन्नी निगाहों से
न बनने दूंगी बेड़ियां पैर के घुंघरुओं को
अब यही हैं मेरे रक्षासूत्र
न खोने दूंगी शक्ति अस्तित्व नारी का ज़माने से"

साहस की लहर

हूं मैं अथाह सागर
हर बूंद में मेरी करवटें है
तरंगों सी उठती ढूंढ़ती हूं
एक ऐसा पाषाण सहारे का
जिससे टकराकर इतराती फिरूं
अपने तन मन के दर्द हल्के करूं

सारी लहरें मेरी खीचती चली
जाती है मनमौजी किनारों पर
उतनी ही ऊर्जा से भरी लौटती हूं फिर
न रुकी हूं मैं, न कभी हारी हूं
बस कभी काले बादलों के भड़काने से
कुछ ज़्यादा ही उग्र हो जाती हूं

परंतु मुझमें पल रहे जीवन
इस ओर ध्यान खींचता है जब
तब प्रेम की शीतलता बरसाती हूं

शक्ति मुझमें ऐसी समाई
की तपते सूर्य से लड़नें
आसमां पर भी जाती हूं
कर उन्हें अपनी अमृत से शांत
वापस धरा पर बरस जाती हूं

ऐसा ही जीवन चलता मेरा
यही है मेरा स्वाभिमान
नाज़ है मुझे खुद पर
समझो न इसे अभिमान
न कभी थकी, न कभी थकुंगी
और न ही कभी हारी हूं
सतयुग में जो साहसी 'सीता' थी
मैं आज भी वही "नारी" हूं
"माटी से बनी मेरी काया"

संगीता देवांगन,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

संगीता देवांगन
रायपुर छत्तीसगढ़

मेरी पहचान

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ,
सृष्टि रचना की सहभागी हूँ,
अचल और अडिग पर्वत हूँ,
मैं ही गंगा ,मैं ही सरस्वती हूँ,
वेग से बहती और ज्ञान से भरी हूँ,
हर रिश्तो में नए नाम के साथ निभती हूँ,

जिस रुप में ढालो वैसे ही ढलती हूँ,
मैं ही शक्ति मैं ही जननी हूँ,
मेरी धरा में कोमल फूल सहेजती हूँ,
हर तरह की कठिनाइयों को सहती हूँ,
साहसी बन सामना भी करती हूँ,
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ...।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–
978-81-951277-0-2